International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 241-242

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 241-242
www.allresearchjournal.com
Received: 29-10-2017
Accepted: 31-11-2017

डॉ0 संजय कुमार झा
सरस्वती विहारए लक्ष्मीसागर,
दरभंगा, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ0 संजय कुमार झा
सरस्वती विहारए लक्ष्मीसागर,
दरभंगा, बिहार, भारत

ऋग्वेद में वर्णित गायत्री मंत्र का महात्म्य

डॉ0 संजय कुमार झा

सारांश
मन्त्र वह है जिसका मनन अथवा चिंतन किया जाए। यह एक प्रकार के तरंग की भांति है जिसका मानव मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव (Impact) पड़ता है।
मन्त्र हमारे अध्यात्मिक ऋषियों के सदियों के चिंतन एवं मनन का सुपरिणाम है। इसलिए ऋषिगण मन्त्र द्रष्टा के नाम से विख्यात हैं। हमारे धर्मग्रन्थों में मंत्र अपौरूषेय माने गए है। मत्रों का यह चिंतन, मनन आदि ऋषियों एवं उनके संतानों में पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आ रहा है। वेद जो ज्ञान का असीमित भंडार है,– ''वेदो हि अखिलं धर्मविज्ञानम्''[1] वह मन्त्रों से भरा परा है।

मुख्य–शब्दः गायत्री मंत्र, ऋषिगण मन्त्र

प्रस्तावना
प्रत्येक वेद में मन्त्रों की संख्या भिन्न–भिन्न है। वेदों में प्राचीनतम् ऋग्वेद में कुल मन्त्रों की संख्या 10552 हैं और सभी के सभी ईश–स्तुति से संबद्ध हैं। कुछ मंत्र विशेष प्रसिद्ध हैं, जैसे गायत्री, सविता महामृत्युंजय मंत्र आदि। 24 अक्षर वाले गायत्री मंत्र के द्रष्टा ऋषि विश्वामित्र, देवता सविता एवं छंद गायत्री हैं और यह तृतीय मण्डल से संबंधित है।
मन्त्र निम्नवत्–

विषयः–

''ऊँ भूर्भुवः सुवः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहिधियो यो नः प्रचोदयात''[2]

मंत्रस्थ तीन पद ऊँ, भूर्भुवः, सुवः परवर्ती काल में जोड़े गए हैं। मूल मंत्र ''तत्सवितु ..... प्रचोदयात'' तक 24 अक्षरीय ही हैं।
ऊँकार ध्वनि आत्मीय भावनाओं को परमात्मा से संयोजित करने का एकमात्र साधन है। यह तीन अक्षरों से मिलकर बना है–
(i) अ + (ii) उ + (iii) म
(i) अ – अविर्भाव अर्थात उत्पन्न होना
(ii) उ – उठना अर्थात् विकास होना
(iii) म – मौन होना अर्थात मृत्यु को प्राप्त होना।

इस तरह इसमें आदि से लेकर अंत तक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाहित है। प्रकारान्तर से हम कह सकते हैं कि इसमें त्रिकाल एवं त्रिदेवत्व रूप समाविष्ट है। भूः भुवः और सुवः ये तीनों लोकों से सम्बद्ध क्रमशः तीन व्याहृतियाँ हैं। भूः अर्थात् भूलोक या पृथ्वी लोक, भूवः अर्थात अंतरिक्षलोक एवं सुवः अर्थार्त् स्वर्गलोक अभिप्राय है कि हमारा पूरा ब्रह्माण्ड या आकाशगंगा इसमें समाहित है। तत् = उसका, सवितुः = सविता का (षष्ठी एक0), देवस्य = देवता के, वरेण्यं – वरणीय = ग्रहणीय, भर्गः = ''भर्जति, भृज्यते अनेनेतिभर्गः''[3] (जव बववा जव तिल) = तेज, धीमहि = ध्यान करें या चिन्तन करें अथवा मनन करें, यः = जो, नः = हमलोगों की, धियः = कर्मों को, प्रचोदयता = सम्यक् सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।
इस प्रकार पूरा मन्त्र इस तथ्य पर बल देता है कि तीनों लोकों किम्वा संसार के अधिष्ठाता सविता देवता के वरण करने योग्य तेज का हम ध्यान या धारण करें जो हमारे कर्मों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे। सम्पूर्ण मंत्र साधक को सविता देव के उस परम दिव्य सत्ता को अपने अंदर समाहित करने की प्रेरणा देता है जो उसे सन्मार्ग चलने की प्रेरणा देता है। मंत्र का सही लय व छंद में किए

गए साधना से व्यक्ति को एक ऐसा आध्यात्मिक बल एवं चेतन शक्ति प्रात हो जाता है जिससे वह असंभव को भी संभव बना सके।

गो, गंगा और गायत्री ये तीनों आस्था के केन्द्र हैं एवं परम पूज्य हैं। त्रयोपासना का फल पुण्दायक एवं शुभकारी माना गया हैं। जैसे गो सेवा लाभकारी है, गंगा स्नान का फल पुण्यदायक है तद्वत् गायत्री की साधना भी बहुत ही लाभदायक है। गायत्री मंत्र की सतत् साधना से व्यक्ति को पुरूषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति होती है, जिससे वह परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। आध्यात्मिक एवं बौद्धिक विकास के लिए गायत्री मंत्र की साधना अनिवार्य है और यह किसी धर्म विशेष से संबंधित नहीं है। यह सबों के लिए है और इसमें मानव मात्र का कल्याण निहित है।

निष्कर्षः

अतः हम कह सकते हैं कि गायत्री मंत्र एक ऐसी उदात्त एवं विकसीत संस्कृति का मधुर फल है जिसकी सच्ची श्रद्धा एवं निष्ठा से की गयी उपासना न केवल मन, कर्म एवं वाणी में शुद्धता लाती है, प्रत्युत् उसकी दिव्य शक्ति को ग्रहण करके साधक स्वतः सन्मार्ग की ओर अनुप्राणित होते रहता है। गायत्री मंत्र में वह शक्ति है जो चेतन प्राणियों में पदार्थ के सुक्ष्मतम कण परमाणु से भी सूक्ष्म प्रकाश की तरह तरंग की भाँति फैलकर उसे परमात्मा की दीव्यता का बोध कराती है।

संदर्भ–सूचीः

1. उपनिषद
2. ऋग्वेद संहिता 03.62.10
3. सिद्धांतकौमुदी